पाठ १० **Class 9th**

ललदयद

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न १- "रस्सी" यहां किस लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर- "रस्सी" निरंतर चलने वाली साँसों के लिए प्रयुक्त किया गया है जो बहुत कमज़ोर है| "कमज़ोर" का आशय है कि जीवन में कोई लक्ष्य और प्रेरणा नहीं है|

प्रश्न २- कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर- कवयित्री कमज़ोर साँसों रुपी रस्सी से जीवन रुपी नौका को पार ले जाना चाहती है पर शरीर रुपी कच्चे बर्तन से जीवन रुपी जल टपकता हैं इसलिए उनके प्रयास व्यर्थ होते जा रहे हैं|

प्रश्न ३- कवयित्री की घर जाने कि चाह से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- सभी संतों के सामान कवयित्री भी मानती हैं कि उसका वास्तविक घर तो वह हैं जहा परमात्मा बसते हैँ क्योंकि जीवात्मा वही से आयी थी और उसे वही लौटकर जाना हैं| इसलिए उसकी उसी घर जाने कि चाह है|

प्रश्न ४- भाव स्पष्ट कीजिये

(क) जेब टटोली कौड़ी न पायी|

भाव- मनुष्य संसार में रहते हुए माया के जाल से लिप्त रहता है और सारी ज़िन्दगी कुछ न कुछ पाने के लिए चाह रखता हैं परन्तु परमात्मा के प्रति ध्यान नहीं लगता, सद्भाव नहीं रखता और सहयोग नहीं करता| जब वह आत्म मंथन करता है तो पता चलता है कि उसने जीवन व्यर्थ गंवा दिया|

(ख) खा-खा कर कुछ पायेगा नहीं,
ना खाकर बनेगा अहंकारी

भाव- माया जाल में उलझकर अपने सुख कि चाह में रहकर मनुष्य स्वार्थी बन जाता है और सुख उपभोग के साधन जुटाते रहने में समय गंवा देता है परन्तु उसे परमात्मा नहीं मिलते| भूखे रहकर ईश्वर कि प्राप्ति करने में वह यह सोचता है कि वह बहुत सयमी बन गया है और उसे ईश्वर कि प्राप्ति होगी यह सोचकर वह अहंकारी बन जाता है|

प्रश्न ५- बंद द्वार कि साँकल खोलने के लिए ललदयद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर- मानव अपने मन और बाहरी विचार के बीच सीधा सम्बन्ध रखे, अपने तन-मन पर नियंत्रण रखे| मन को साधने के बाद चेतना उत्पन्न होगी जिससे हमारे मन का द्वार खुल जायेगा और ईश्वर प्राप्ति का रास्ता दिखने लगेगा|

प्रश्न ६- (छात्र इस प्रश्न को स्वयं करे, या अभ्यास कार्य है)

प्रश्न ७- ज्ञानी से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- ज्ञानी से अभिप्राय उस मानव से है जो दूसरों की सेवा, अपना कर्म और दूसरो का सहयोग को जानता और समझता है| इस संसार में मनुष्य कि भूमिका सबसे अहम् है इसलिए उसे चाहिए कि संसार के नीति-नियमों का ज्ञान हो और सरल मन से उसी ज्ञान के रास्ते पर वह चले| वह मायाजाल से दूर रहकर जात-पात और भेद-भाव को दूर करे तभी उसके सद्भाव सफल होंगे और वह ज्ञानी बन सकता है|